डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15, अगस्त, 2020
वर्षः 03, अंक–10

आपदा संभावनाओं और अवसर का द्वार हैः राज्यमंत्री 03

शिक्षा के साथ अनुसंधान को अंगीकृत करना होगा : कुलपति 04

महामारी में सावधानी ही सर्वोत्तम बचाव का उपाय हैः प्रो0 रविशंकर सिंह

08 अगस्त। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के बायोकमेस्ट्री विभाग में 'लुकिंग एट लाइफ डिफरेंटलीः ए फॉल आऊट आफ कोविड–19 पेंडेमिक' विषय पर 06–08 अगस्त, 2020 को तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने बताया कि कोविड–19 महामारी से गंभीर संक्रमण फैल रहा है। महामारी में सावधानी ही सर्वोत्तम बचाव का उपाय है। कोविड–19 से बचाव के जो उपक्रम चिकित्सा विज्ञानियों के द्वारा बताए जा रहे हैं। उसे बड़े पैमाने पर अपनाए जाने की आवश्यकता है। कोविड–19 में मनुष्य को जीवन शैली में बदलाव लाने के लिए विवश कर दिया है। महामारी से बचाव के लिए दृष्टिकोण में परिवर्तन और तकनीकों के प्रयोग में प्राथमिकता देनी होगी।

हेमवती नंदन बहुगुणा चिकित्सा विश्वविद्यालय उतराखंड के कुलपति प्रो0 हेमचन्द्र पाण्डेय ने बताया कि सभी चिकित्सालय अपने स्तर पर कोविड–19 महामारी की रोकथाम के लिए तकनीकी सुविधाओं की बढोत्तरी में प्रयत्नशील है। महामारी में चिकित्सकों एवं स्वास्थ्य कर्मियों को एक गंभीर चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। महामारी से निपटने के लिए व्यापक रणनीति की जरूरत है। प्रो0 पाण्डेय ने कोरोना वायरस से लड़ने के विभिन्न साधनों एवं संसाधनों के उपयोग पर चर्चा करते हुए कहा कि वायरस के पैटर्न को समझने की आवश्यकता है।

प्रख्यात वैज्ञानिक व मनोचिकित्सक एवं सी0एस0आई0आर0 के निदेशक प्रो0 प्रमोद कुमार त्रिवेदी ने बताया कि इस महामारी से निपटने के लिए सी0एस0आई0आर0 अपनी प्रयोगशालाओं में नवीनतम किट तैयार करने की दिशा में प्रयत्नशील है। सीएसआईआर कोविड–19 के प्राथमिक संरचना से जुड़े विन्दुओं पर शोध कर रही है। डॉ0 त्रिवेदी ने कोविड–19 की रोकथाम के लिए औषधीय पौधों पर आधारित उत्पादों पर चल रहे शोधो के संदर्भ में प्रकाश डाला।

लखनऊ विश्वविद्यालय के जैव–रसायन विज्ञान के विभागाध्यक्ष प्रो0 यू0एन0 द्विवेदी ने कोरोना वायरस के मनोवैज्ञानिक प्रभाव का शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली पर पड़ने वाले असर पर व्यापक चर्चा की और कहां कि सभी उम्र के लोगों को अपनी नियमित दिनचर्या में व्यायाम सहित सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाए जाने की आवश्यकता है। प्रो0 द्विवेदी ने बताया कि कोरोना वायरस पर अभी व्यापक अध्ययन की आवश्यकता है। वायरस से बचाव के लिए आवश्यक सावधानियां अपनाने की जरूरत है।

गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रामा शंकर दुबे ने भारत में कोरोना की बीमारी के विभिन्न प्रयासों पर होने वाले प्रभाव की चर्चा की। डॉ0 गुंजन तिवारी मैनेजर एप्लीकेशन साइंस, यूएसए ने कोविड–19 पर बनने वाली वैक्सीन के संदर्भ में विस्तारपूर्वक चर्चा की और वैक्सीन के निर्माण में आने वाली बाधाओं पर उन्होंने प्रकाश डाला। पंजाब विश्वविद्यालय के प्रो0 रजत संधीर ने कोरोना काल में किए गए नए आविष्कारों पर प्रकाश डाला और छात्रों को वायरस के शोध पर केंद्रित होने के लिए प्रेरित किया। सऊदी अरब के जैव–रसायन वैज्ञानिक डॉ0 निखत जमाल ने कोविड–19 पर प्रकाशित शोध पत्र पर चर्चा की। प्रो0 सुनील सिंह ने वायरस पर शोध करते हुए अपने अनुभव को साझा किया। मेलबॉर्न की मनोवैज्ञानिक डॉ0 अमिता सरकार एवं शिकागो की मनोचिकित्सक डॉ0 स्वाति बाजपेयी ने भी वायरस के अलग–अलग शरीर पर पड़ने वाले प्रभाव पर चर्चा की।

विज्ञान संकायाध्यक्ष प्रो0 चयन कुमार मिश्र ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो0 फारुख जमाल ने तीन दिवसीय कार्यक्रम की रिपोर्टियर प्रस्तुत की। विभाग की प्रो0 नीलम पाठक ने अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में शिक्षक एवं प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े रहे।

प्रो0 रवि शंकर सिंह ने अवध विश्वविद्यालय के कुलपति का कार्यभार ग्रहण किया

31 जुलाई । बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के भू–भौतिकी विज्ञान के प्रो0 रवि शंकर सिंह ने डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के 17 वें कुलपति के रूप में कार्यभार ग्रहण कर लिया है।

विश्वविद्यालय के निर्वतमान कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने नवागत कुलपति प्रो0 सिंह को कार्यभार ग्रहण कराया। कुलसचिव उमानाथ ने कार्यभार ग्रहण करने की कागजी प्रकिया पूरी कराई। कार्यभार ग्रहण करने के पूर्व निवर्तमान कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित व नवागत कुलपति प्रो0 सिंह के बीच मंत्रणा की गई। उसके उपरांत प्रो0 दीक्षित ने नवागत कुलपति प्रो0 रवि शंकर सिंह से कुलपति सभाागार में उपस्थित शिक्षकों एवं कर्मचारियों का परिचय कराया। प्रो0 सिंह के विश्वविद्यालय आगमन पर शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने पुष्पगुच्छ भेंटकर उनका स्वागत किया।

इस अवसर पर मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, कुलसचिव उमानाथ, उपकुलसचिव विनय सिंह, कार्यपरिषद सदस्य ओम प्रकाश सिंह, प्रो0 एस0एन0 शुक्ल, प्रो0 जसवंत सिंह, प्रो0 आर0के0 तिवारी, प्रो0 आशुतोष सिन्हा, प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह, प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, प्रो0 फारूख जमाल, प्रो0 राजीव गौड़, प्रो0 चयन कुमार मिश्र, प्रो0 एस0एस0 मिश्र, प्रो0 रमापति मिश्र, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, प्रो0 शैलेन्द्र वर्मा, डॉ0 संग्राम सिंह, डॉ0 रोहित सिंह, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा, डॉ0 विनोद चौधरी, डॉ0 अभिषेक सिंह, डॉ0 मुकेश वर्मा, रवि मालवीय, विष्णु यादव, डॉ0 मोहन तिवारी डॉ0 राजेश सिंह, डॉ0 अनिल शर्मा, गिरीश चन्द्र पंत सहित बड़ी संख्या में शिक्षक एवं कर्मचारी सोशल डिस्टेंसिंग का अनुपालन करते हुए उपस्थिति रहे।

स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने के साथ–साथ देश की प्रगति में सहयोग करें : औद्योगिक विकास मंत्री

14 अगस्त। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय एवं विज्ञान भारती, अवध प्रांत के संयुक्त संयोजन "फ्यूचर रिस्ट्रक्चरिंग थ्रू इनोवेशन" विषय पर 12–14 अगस्त, 2020 को तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अपने उद्बोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि इस आपदा में संभावनाओं को तलाशने के लिए हमें असंभव में जाना होगा। तभी हम अपने मार्ग को प्रशस्त कर सकते है। बाजार में बने रहने एवं आर्थिक संवृद्धि में भागीदार बनने के लिए किसी भी संस्था के लिए नवाचार की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। आज की इस महामारी में भारत ने मेडिकल सुविधाओं के क्षेत्र में अपने को अपग्रेड किया है। अपग्रेड के बिना इनका बाजार की प्रतिस्पर्धा में बना रहना संभव नहीं है। कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि आज समाज की जरूरत आर्थिक संवृद्धि एवं शैक्षणिक विकास के साथ–साथ पर्यावरणीय संवृद्धि भी है। इसी दिशा में भारत सरकार द्वारा किए गए प्रयासों मेक इन इंडिया एवं आत्मनिर्भर भारत अभियान प्रमुख हैं।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार के औद्योगिक विकास मंत्री सतीश महाना ने देश में आत्मनिर्भरता बढ़ाने पर जोर देते हुए प्रदेश सरकार एवं केन्द्र सरकार की कई सारी योजनाओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इस तरह के नवाचार के लिए सरकार आर्थिक रूप से सहायता भी प्रदान कर रही है। इस आपदा काल में आत्मनिर्भर बनकर देश को विश्वगुरू बनाने में मदद करनी चाहिए। उन्होंने प्रतिभागियों से कहा कि वे अपने विचारों को मूर्त रूप देने और स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने के साथ–साथ देश की प्रगति में सहयोग करें। कार्यक्रम में विज्ञान भारती के अखिल भारतीय संगठन सचिव जयंत सहस्त्रबुद्धे ने राष्ट्रीय स्तर पर नवाचार को बढ़ावा देने एवं उसके होने वाले दूरगामी परिणामों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि नवाचार सिर्फ दिखावे के लिए नहीं है, बल्कि जमीनी स्तर पर भी लाभप्रद होना चाहिए।

विशिष्ट अतिथि नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन गवर्नमेंट ऑफ इंडिया के उपाध्यक्ष एन0पी0 राजीव ने बताया कि किसी भी क्षेत्र में कार्य करते समय समस्याएं आती है। वही समस्याएं ही नवाचार की जननी है। विशेष रूप से जब आज पूरी दुनिया कोरोना जैसे वायरस का दंश झेल रही है तब हमें आगे आना होगा और देश के विकास के लिए एक नये नवाचार को लाना होगा, जिससे हम अपने विश्वगुरू के खिताब को फिर से प्राप्त कर सके। एन0एच0एम0(उ0प्र0) के अतिरिक्त निदेशक डॉ0 हीरालाल ने अपने अनुभव को साझा करते हुए बताया कि आवश्यकता पड़ने पर नवाचार से समस्याओं को दूर किया जा सकता है। 'भू–जल बचाओ, पेय जल बढ़ाओ' योजना के द्वारा बांदा में पानी की समस्याओं का अंत हुआ और पानी का संरक्षण किया जाने लगा।

तकनीकी सत्र को संबोधित करते हुए मिट्टीकूल के संस्थापक मंसुख भाई प्रजापति ने मिट्टी से बने इनोवेशन को सबके साथ साझा किया। मिट्टी के बर्तन, फ्रिज, तवा, प्रेशर कुकर आदि का निर्माण किया जिसका प्रयोग दुनिया के कई वैज्ञानिक और डॉक्टर भी कर रहे हैं। इस प्रयोग से दवाओं तक को भी सुरक्षित रखा जा सकता है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ सरस्वती वंदना एवं विश्वविद्यालय के कुलगीत से किया गया। विश्वविद्यालय प्लेसमेंट सेल की निदेशक डॉ0 गीतिका श्रीवा. स्तव एवं मनीषा यादव द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया। कार्यक्रम में अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन विज्ञान भारती के अवध प्रांत के इनोवेशन भारत मिशन के चीफ कोऑर्डिनेटर संदीप द्विवेदी एवं विज्ञान भारती की श्रेयांश मंडोली ने किया।

कार्यक्रम के आयोजक राजीव कुमार ने बताया कि यह कार्यक्रम तीन दिनों तक संचालित इस कार्यक्रम में उत्साह के साथ इस अवसर पर बड़ी संख्या में शिक्षक एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

मंथन

15 अगस्त, 2020: भाद्रपद, कृष्ण पक्ष, एकादशी, विक्रम संवत् 2077

"महान पुरुष की पहली पहचान उसकी विनम्रता है।"

नए भारत की आधारशिला है नई शिक्षा नीति

केंद्र सरकार ने इसरो के पूर्व अध्यक्ष डॉ0 के0 कस्तूरीरंगन की समिति द्वारा तैयार राष्ट्रीय शिक्षा नीति को मंजूरी दे दी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में 34 साल बाद हुए व्यापक परिवर्तन के तहत मेडिकल और विधि को छोड़कर समग्र उच्च शिक्षा का एक नियामक होगा। स्नातक तक पढ़ाई के लिए एक ही प्रवेश परीक्षा होगी। पांचवीं तक पढ़ाई मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में होगी। नर्सरी से स्नातक तक के पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढांचे को चार भागों में विभाजित किया गया है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम पुनः शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है। एक बड़े फैसले में नई नीति में शिक्षा पर खर्च को बढ़ा दिया गया है। अब शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 6 प्रतिशत खर्च होगा, जो वर्तमान में 4.43 प्रतिशत था। नई नीति का लक्ष्य समग्र शिक्षा को बढ़ावा देना है। नई शिक्षा नीति मील का पत्थर साबित होगी। इसके अंतर्गत 2035 तक उच्च शिक्षा में पंजीकरण मौजूदा 26.3 फीसदी से बढ़ाकर 50 फीसदी पहुंचाने का लक्ष्य है। इसके लिए विभिन्न पाठ्यक्रमों में 3.5 करोड़ नई सीटों की वृद्धि की जाएगी। उच्च शिक्षा के संस्थानों को फीस चार्ज करने के मामले में और पारदर्शिता लानी होगी। एस0सी0, एस0टी0, ओ0बी0सी0 और अन्य विशिष्ट श्रेणियों से जुड़े हुए छात्रों की योग्यता को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जाएगा। छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्रों की प्रगति को समर्थन प्रदान करना, उसे बढ़ावा देना और उनकी प्रगति को ट्रैक करने के लिए राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल का विस्तार किया जाएगा। निजी उच्च शिक्षण संस्थानों को अपने यहां छात्रों को बड़ी संख्या में मुफ्त शिक्षा और छात्रवृत्तियों की पेशकश करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। ई–पाठ्यक्रम क्षेत्रीय भाषाओं में विकसित किए जाएंगे। वर्चुअल लैब विकसित की जा रही है और एक राष्ट्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी फोरम बनाया जा रहा है। हाल ही में वैश्विक महामारी में वृद्धि होने के परिणामस्वरूप ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सिफारिशों के एक व्यापक सेट को कवर किया गया है, जिससे जब कभी और जहां भी पारंपरिक और व्यक्तिगत शिक्षा प्राप्त करने का साधन उपलब्ध होना संभव नहीं है वहां पर अध्ययन–अध्यापन सुनिश्चित हो सके। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के वैकल्पिक साधनों की तैयारियों को सुनिश्चित करने के लिए, स्कूल और उच्च शिक्षा दोनों को ई–शिक्षा की जरूरतों को पूरा करने हेतु शिक्षा मंत्रालय में डिजिटल अवसंरचना, डिजिटल कंटेंट और क्षमता निर्माण के उद्देश्य से एक समर्पित इकाई बनाई जाएगी। स्कूली शिक्षा में बड़ा बदलाव करते हुए बोर्ड परीक्षा का आयोजन साल में एक बार की जगह सेमेस्टर या दो बार (वस्तुनिष्ठ और प्रश्नोत्तर श्रेणियों में विभाजित) करने की योजना है।

भाई–बहन के प्रेम का प्रतीक है रक्षाबंधन

राधा गोस्वामी

भारत त्योहारों का देश है, यहां के प्रमुख त्योहारों में एक रक्षाबंधन भी है। रक्षाबंधन के दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधती हैं और उनकी लंबी उम्र की कामना करती हैं, बदले में भाई, बहन की रक्षा का वचन देता है। रक्षाबंधन या राखी का त्योहार श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है। सावन महीने में यह त्योहार पड़ने के कारण इसे श्रावणी व सलोनी के नाम से भी जाना जाता है परन्तु इस त्योहार का सबसे ज्यादा प्रचलित नाम रक्षाबंधन या राखी ही है। यह श्रावण मास के पूर्णिमा में पड़ने वाला हिन्दू तथा जैन धर्म का प्रमुख त्योहार है। रक्षाबंधन का शाब्दिक अर्थ रक्षा करने वाला बंधन या धागा है, जिसे बहन अपने भाई की कलाई पर बांधती है।

रक्षाबंधन का एक अनोखा इतिहास भी है। कहा जाता है कि एक बार देवताओं और असुरो में युद्ध आरंभ हुआ। युद्ध में हार के परिणामस्वरूप देवताओं ने अपना राज पाठ सब युद्ध में गवां दिया। अपना राज पाठ पुनः प्राप्त करने की इच्छा से देवराज इंद्र देवगुरु बृहस्पति से मदद की गुहार करने लगे। तत्पश्चात देवगुरु बृहस्पति ने श्रावण मास के पूर्णिमा के प्रातःकाल में मंत्र से रक्षा विधान संपन्न किया। इस पूजा से प्राप्त सूत्र को इंद्राणी ने इंद्र के हाथ पर बांध दिया, जिससे युद्ध में इंद्र को विजय प्राप्त हुआ और उन्हें अपना हारा हुआ राज पाठ वापस मिल गया। तब से इस पवित्र त्योहार को धूमधाम से मनाया जाने लगा। हम सभी को यह त्योहार परंपरागत विधि से मनाना चाहिए। हमारे पूर्वजों द्वारा बनाए गए पर्वों, त्यौहारों व उपवास के विधि–विधान हमारी सभ्यता, संस्कृति के रक्षक हैं। इन सब से ही हमारी पहचान होती है। राखी का त्योहार मुख्य रूप से भारत, नेपाल, मलेशिया तथा अन्य देशों में भी मनाया जाता है।

रक्षाबंधन के संदर्भ में एक प्रसंग और भी है जो अत्यधिक

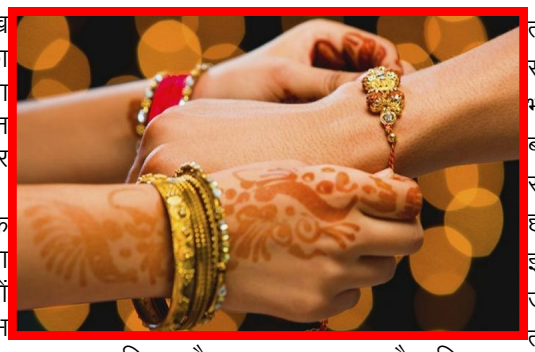

प्रचलित है। कहा जाता है कि चितौड़गढ़ की रानी कर्णावती ने जब देखा कि उनके सैनिक बहादुर शाह के सैन्य बल के आगे टिक नहीं पाएंगे, ऐसे में रानी कर्णावती ने बहादुर शाह से मेवाड़ की रक्षा हेतु मुगल बादशाह हुमायूं को राखी भेजा। हिन्दू न होने के बावजूद हुमायूं ने राखी के महत्व की वजह से बहादुर शाह को हराकर रानी कर्णावती के राज्य की रक्षा की।

भाई बहन का रिश्ता बेहद खास और अटूट होता है। जिस तरह से वे एक–दूसरे की देखभाल करते हैं वह अतुलनीय है। भाइयों और बहनों के साथ एक साझा संबंध और बंधन विश्वसनीय होता है। यह रिश्ता भाई बहन के साथ साथ दोस्ती का भी होता है जिसमें भाई बहन एक अच्छे दोस्त होते हैं और अपनी भावनाओं और विचारों का आदान प्रदान करते हैं। रक्षाबंधन का त्योहार इस रिश्ते को और भी गहरा और मजबूत बनाता है।

हर साल रक्षाबंधन के त्योहार का सभी बहनों को बेसब्री से इंतजार रहता है। इस दिन भाई जहां कहीं भी हो ,वे अपनी बहन से मिलने और उनसे राखी बंधवाने उनके पास पहुंच ही जाते है। ऐसे में त्योहार का इंतजार महीनों पहले शुरू हो जाता है। बच्चे भी राखी के त्योहार के लिए अत्यधिक उत्साहित रहते हैं। यह त्योहार भाई बहन के बीच प्रेम के अटूट रिश्ते को दर्शाता है। भाई बहन के इस त्योहार को बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। रक्षाबंधन का यह त्योहार खुशियों का त्योहार होता है। इस त्योहार से भाई बहन के बीच की दूरी खत्म होती है साथ ही यह पवित्र रिश्ता और भी अटूट हो जाता है।

नंद के आनंद भयो जय कन्हैया लाल की...

आशुतोष श्रीवास्तव

भारत में कृष्ण जन्माष्टमी एक प्रमुख धार्मिक त्यौहार है। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार श्रीकृष्ण भगवान विष्णु के आठवें अवतार थे। भगवान विष्णु ने मानव के दुखों को दूर करने के लिए कृष्ण के रूप में मनुष्य का जन्म लिया था। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म देवकी और वसुदेव के आठवें पुत्र के रूप में मथुरा में हुआ था, इनका लालन–पालन गोकुल में बाबा नन्द व माता यशोदा ने किया। जन्माष्टमी एक ऐसा त्योहार है जिसे लोग पूरे उत्साह के साथ मनाते है। इस पवित्र दिन भक्त मंदिरों में भगवान से प्रार्थना कर उन्हें भोग लगाते है। इस दिन लोग अपने घरों में बाल गोपाल को दूध, दही, शहद, पानी से अभिषेक करके नए वस्त्र पहनाते है।

द्वापर युग में भोजवंशी राजा उग्रसेन मथुरा में राज किया करते थे, उनके आततायी पुत्र कंस ने उन्हें गद्दी से उतार दिया और स्वयं मथुरा का राजा बन बैठा। कंस की बहन देवकी थी जिसका विवाह वसुदेव नामक यदुवंशी सरदार से हुआ था। कंस अपनी बहन देवकी से बहुत स्नेह करता था, मगर एक दिन आकाशवाणी हुई कि उसकी बहन देवकी का आठवां पुत्र कंस का वध करेगा। यह आकाशवाणी सुनकर कंस ने अपनी बहन देवकी और उसके पति वसुदेव को कारागार में डाल दिया। कंस ने वसुदेव–देवकी के एक–एक करके सातों बच्चों को जन्म लेते ही मार डाला। ऐसा माना जाता है कि जब आठवें पुत्र के रूप में कृष्ण का जन्म हुआ तो कारागार के सारे पहरेदार सो गए थे और देवकी और वसुदेव की बेड़ियां अपने आप ही खुल गई थी। तब एक आकाशवाणी हुई कि कृष्ण को जल्द से जल्द गोकुल

पहुंचा दिया जाए, उसके बाद कृष्ण के पिता वसुदेव ने उन्हें सूप में सुला कर वर्षा ऋतु में उफनाती हुई नदी को पार करके गोकुल में कृष्ण को नंद के यहां छोड़ कर आए थे। कृष्ण ने मथुरावासियों को निर्दयी राजा कंस के शासन से मुक्ति दिलाई तथा महाभारत के युद्ध में पांडवों को जीत दिलाने में भी अहम भूमिका निभाई थी। कृष्ण ने महाभारत के युद्ध में सांसारिक मोह–माया के बारे में गीता का ज्ञान दिया।

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं...

शिवराम चतुर्वेदी

भारतीय लोकतंत्र और हर भारतीय के लिए 15 अगस्त का दिन बहुत महत्वपूर्ण है। यही वह दिन है जब भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्ति मिली थी। इसी वजह से हर साल 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। अंग्रेजों के बढ़ते हुए अत्याचारों और अमानवीय व्यवहार से त्रस्त भारतीय जनता एकजुट हो इससे छुटकारा पाने हेतु कृतसंकल्प हो गई। सुभाषचंद्र बोस, भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद ने क्रांति की ज्वाला फैलाई। महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, राजेन्द्र प्रसाद, भीमराव आम्बेडकर आदि ने सत्य, अहिंसा और बिना हथियारों की लड़ाई लड़ी। इनके नेतृत्व में देशवासियों ने सत्याग्रह आंदोलन किए, लाठियां खाईं, कई बार जेल भी गए। अंततः अंग्रेजों को 15 अगस्त 1947 के स्वर्णिम दिन भारत छोड़ना पड़ा।

यह दिन 1947 से आज तक हम बड़े उत्साह और प्रसन्नता के साथ मनाते चले आ रहे हैं। इस दिन सभी प्रमुख स्थलों, विद्यालयों, सरकारी कार्यालयों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है, राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत गाया जाता है, देश के महान सपूतों को श्रद्धा सुमन अर्पित किया जाता है। देश की राजधानी नई दिल्ली में हमारे प्रधानमंत्री लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं। प्रधानमंत्री राष्ट्र के नाम संदेश देते हैं। देश भर में यह त्योहार बड़ी धूमधाम और भव्यता के साथ मनाया जाता है।

पंद्रह अगस्त के दिन का ऐतिहासिक महत्व है। इस दिन की याद आते ही सभी बलिदानियों के प्रति श्रद्धा से मस्तक अपने आप ही झुक जाता है। हम सभी का पुनीत कर्तव्य है कि हम देश की स्वतंत्रता की रक्षा करें। देश का नाम विश्व में रोशन हो, ऐसा कार्य करें। देश की प्रगति के साधक बनें न कि बाधक। भारत के हर कोने में इस दिन झंडा फहराया जाता है और पूरे देश में हर्षोल्लास का माहौल रहता है। इस दिन का इंतजार बच्चे, युवा और बुजुर्ग सभी करते हैं। सही मायने में देश के लिए वफादार बनना ही देश की सेवा है। इससे देश भीतर से मजबूत होता हैं देश में एकता बढती हैं और एकता ही देश की

शक्ति होती हैं और इसी एकता के दम पर देश ने आजादी प्राप्त की। देश के नागरिक होने के नाते स्वतंत्रता का न तो स्वयं दुरुपयोग करें और न दूसरों को करने दें। एकता की भावना से रहें और अलगाव, आंतरिक कलह से बचें। हमें अच्छे कार्य करने एवं देश को आगे बढ़ाने का संकल्प लेना होगा।

जन–अभिव्यक्ति

ई–मासिक पत्रिका अवध अभिव्यक्ति से विश्वविद्यालय परिसर के किया–कलाप का ज्ञान होता है। कारगिल विजय दिवस और जनसंख्या दिवस के लेख बहुत ही रूचिकर और ज्ञानवर्द्धक रहे।

–अंकिता श्रीवास्तव

सुविचार

हर्ष और आनंद से परिपूर्ण जीवन केवल ज्ञान एवं विज्ञान के आधार पर संभव है।

–डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

प्रमुख संरक्षक
प्रो0 रवि शंकर सिंह, कुलपति
संरक्षक
डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, समन्वयक
प्रकाशक
श्री उमानाथ, कुलसचिव
सम्पादक मण्डल
डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा
डॉ0 अनिल कुमार विश्वा
डॉ0 राज नारायण पाण्डेय
संकलन एवं सम्पादन
रजनीश, सौरभ एवं सिद्धान्त

Feedback

avadhabhivyakti@gmail.com

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

स्मार्ट इंडिया हैकथान नवाचार का एक श्रेष्ठ मंच हैः प्रो0 सिंह

04 अगस्त। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के आई0ई0टी0 संस्थान में स्मार्ट इंडिया हैकथान–2020 कार्यक्रम का आयोजन 01–03 अगस्त 2020 को किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के नवागत कुलपति प्रो0 रवि शंकर सिंह ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए बताया कि स्मार्ट इंडिया हैकथान नवाचार का एक श्रेष्ठ मंच है। यह तकनीकी संस्थानों के लिए बहुत उपयोगी है। यह प्रतिभागियों के कौशल में बदलाव लाने का एक माध्यम हैं। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को नई–नई जानकारी मिलती है। जानकारी के साथ–साथ नई दिशा में कार्य करने का अनुभव मिलता है। प्रो0 सिंह ने बताया कि स्मार्ट इंडिया हैकथान एक एकेडमिक स्पोर्ट्स है, जिसमें खेल–खेल में ही विद्यार्थी समस्याओं का हल निकाल लेते हैं। ऐसा करने से छात्रों के अंदर एक उत्साह पैदा होता है, जिसके कारण वे भविष्य में अपने कौशल एवं क्षमता का सदुपयोग करके नई–नई खोज भी विकसित कर सकते हैं।

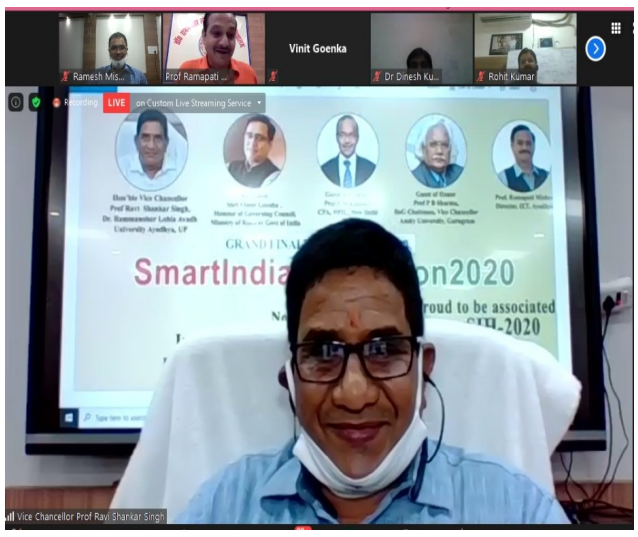

कार्यक्रम में गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति प्रो0 वी0के0 सिंह ने बताया कि इस तरह के कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को बेहतर प्लेटफार्म उपलब्ध कराना है, जिससे वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके। स्मार्ट इंडिया हैकथान कार्यक्रम के लिए विश्वविद्यालय को नोडल केन्द्र बनाया गया है। निश्चित ही इन तीन दिनों में प्रतिभागियों ने बेहतर प्रदर्शन किया होगा।

मेम्बर ऑफ गवर्निंग कॉउन्सिल ऑफ इंडियन रेलवे के विनीत गोयनका ने कहा कि हैकथान होना किसी भी विश्वविद्यालय के लिए बहुत ही सम्मान की बात है। छात्रों द्वारा अपनी सोच को पेटेंट कराकर उसकी संपूर्ण जानकारी अपने पास रखना बहुत ही आवश्यक है।

मिनिस्ट्री ऑफ रेलवे से मुख्य अतिथि एसएस माथुर, गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में अनिल कुमार, एसपीआईयू ल खनऊ एवं एमएचआरडी से अजय राजावत भी ऑनलाइन जुड़े रहे।

संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र ने बताया कि स्मार्ट इंडिया हैकथान में आईईटी संस्थान को नोडल केन्द्र बनाया गया। इन तीन दिनों में कुल चार मंत्रालयों की टीमों ने प्रतिभाग किया, जिनमें रेलवे, जनजातीय मामले, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग और तकनीकी शिक्षा निदेशालय, चंडीगढ़ की टीम द्वारा समस्याओं पर मंथन किया गया।

धन्यवाद ज्ञापन इंजीनियर परितोष त्रिपाठी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में टेक्निकल सपोर्ट रमेश मिश्र तथा परिमल त्रिपाठी द्वारा किया गया।

इस अवसर पर अमित भाटी, दीपक कोरी, अमितेश पंडित, शोभित श्रीवास्तव, शाम्भवी शुक्ला, आस्था सिंह कुशवाहा, महेश चौरसिया, अखिलेश मौर्य, नवीन पटेल, विनीत सिंह एवं संजीत पांडे सहित अन्य उपस्थित रहे।

आपदा संभावनाओं और अवसर का द्वार हैः राज्यमंत्री

26 जुलाई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र लखनऊ के संयुक्त संयोजन में "आईसीटी लर्निंग एंड कंटेंट डेवलपमेंट" विषय पर सात दिवसीय(20–26 जुलाई, 2020) फैकेल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन किया गया।

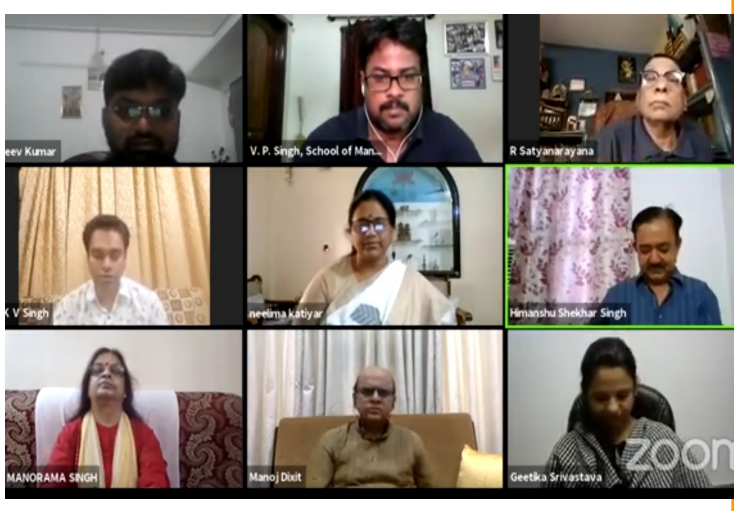

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार की उच्च शिक्षा और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री नीलिमा कटियार ने सात दिवसीय फैकेल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम की सराहना करते हुए कहा कि संक्रमण काल में हमारे समक्ष चुनौतियां और प्रतिकूल परिस्थितियां रहीं, लेकिन उसमें हम अपना कैसे सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकते है वह हमें सीखने को मिला। उन्होंने कहा कि हमारे गुरुओं ने आपदा में अपने वैशिष्ट्य को बचाकर रखा है। शिक्षा क्षेत्र की जब बात होती है तब हमने आपदा काल में भारत की विशेषज्ञता सिद्ध की है। आपदा संभावनाओं और अवसर का द्वार है। इसी अवसर को सार्थक बनाते हुए भारत को दैदीप्यमान करना होगा। उन्होंने कहा कि व्यवस्था परिवर्तन हुआ है और फिजिकल के स्थान पर वर्चुअल क्लासेज आ रहे हैं। हम संसाधनों का प्रयोग करके लोकल को ग्लोबल कर सकते है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि हमारे भारत के शिक्षकों एवं छात्रों में जिजीविषा है। जब आपदा आती है तो वे अपने को उसमें ढाल लेते है। यह भारतीयो की अद्भुत क्षमता है। कुलपति ने कहा कि आपदा को अवसर के रूप में देखे और अपना सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास करें।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता स्ट्राइड इग्नू, नई दिल्ली के प्रो0 रामपल्ली सत्य नारायण ने बताया कि इस महामारी में एक नये तरह की शिक्षा पद्धति पर विचार करने की आवश्यकता है। ई–कंटेंट, वर्चुअल लैब, वर्चुअल प्रोग्रामिंग को आज के समय में शिक्षक के लिए नितांत आवश्यक बताया। उन्होंने बताया कि नई तकनीकी के माध्यम से ज्ञान अर्जित कर अपने छात्रों को श्रेष्ठ ज्ञान दे सकते है।

कार्यक्रम में क्षेत्रीय निदेशक डॉ0 मनोरमा सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुए सात दिवसीय फैकेल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन फैकेल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम के चेयरमैन प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह ने बताया कि सात दिवसीय कार्यक्रम में प्रतिदिन दो तकनीकी सत्रों को संचालित किया गया। इसमें लगभग 250 प्रतिभागियों ने नियमित रूप से उपस्थित होकर ज्ञानार्जन किया।

कार्यक्रम की संयोजिका डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव ने रिपोर्टियर प्रस्तुत की। आईक्यूएसी के निदेशक डॉ0 नरेश चौधरी ने सात दिवसीय कार्यक्रम के औचित्य पर प्रकाश डाला। इग्नू के सहायक निदेशक डॉ0 कीर्ति विक्रम सिंह ने अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर राजीव कुमार ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया एवं बड़ी संख्या में प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े रहे।

सैन्यकर्मियों के लिए ऑनलाइन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

08 अगस्त। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र ,लखनऊ एवं इग्नू अध्ययन केंद्र अवध विश्वविद्यालय अयोध्या के सहयोग से 63–सी0आर0पी0एफ0 बटालियन अयोध्या के अधिकारियों एवं जवानों के लिए एक ऑनलाइन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में इग्नू क्षेत्रीय केंद्र, लखनऊ की निदेशक डॉ0 मनोरमा सिंह ने अधिकारियों एवं जवानों को संबोधित करते हुए बताया कि इग्नू द्वारा विभिन्न पाठ्यक्रम चलाए जा रहे है। इसके माध्यम से हर कोई अपने कौशल का संवर्धन कर सकता है। इस आपदा में यह केन्द्र विद्यार्थियों की हर संभव मदद कर रहा है।

केन्द्र के सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ0 कीर्ति विक्रम सिंह ने विश्वविद्यालय द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न पाठ्यक्रमों की विस्तार से जानकारी दी। डॉ0 सिंह ने सी0आर0पी0एफ0 कर्मियों को आपदा प्रबंधन, एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग, ह्यूमन राइट्स एवं साइबर क्राइम, प्राथमिक चिकित्सा आदि प्रमाण पत्र कार्यक्रमों में नामांकन कराने के लिए प्रेरित किया।

इग्नू अध्ययन केंद्र, अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या के समन्वयक प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह ने 63–बटालियन, सी0आर0पी0एफ0, अयोध्या के कमांडेंट धर्मेंद्र सिंह विशेन को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि अगर सीआरपीएफ का कोई भी अधिकारी या जवान इग्नू के कार्यक्रमों में अपना नामांकन कराता है तो अध्ययन केंद्र द्वारा हर संभव सहायता प्रदान की जाएगी।

शिक्षक, अधिकारी और कर्मचारी बिना अनुमति के मुख्यालय नहीं छोड़ पाएंगे

अयोध्या। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारी बिना अनुमति के मुख्यालय नहीं छोड़ पाएंगे। विश्वविद्यालय में अवकाश के लिए सक्षम अधिकारी से अनुमति लेना पड़ेगा। इस सम्बन्ध में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के आदेश पर कुलसचिव उमानाथ ने कार्यालय आदेश जारी किया है।

कुलसचिव ने बताया कि किसी भी शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारी को मुख्यालय छोड़ने से पूर्व सक्षम अधिकारी से अवकाश एवं यात्रा की अनुमति लेना होगा। इस आशय का पत्र सभी संकायाध्यक्षों, विभागाध्यक्षों एवं कार्यालय अधीक्षकों को कड़ाई से अनुपालन कराने के लिए प्रेषित किया गया है।

आचार्य मनोज दीक्षित की स्नेहपूर्ण विदाई

31 जुलाई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के 16वें कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित का कार्यकाल पूर्ण होने पर विदाई सम्मान समारोह कौटिल्य प्रशासनिक भवन में किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो0 दीक्षित ने शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप सभी अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर रहें। विश्वविद्यालय एक परिवार है, इसमें सभी का सहयोग महत्वपूर्ण माना जाता है। आज विश्वविद्यालय ने आप सभी के सहयोग से नई ऊंचाइयों को प्राप्त किया है। प्रो0 दीक्षित ने सभी शिक्षकों अधिकारियों एवं कर्मचारियों को विश्वविद्यालय के प्रति निष्ठावान बनकर कार्य करने की सलाह दी।

विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने कुलपति प्रो0 दीक्षित के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की एवं उनके द्वारा विश्वविद्यालय के विकास में किये कार्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर प्रति कुल. पति प्रो0 एस0एन0 शुक्ल, मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, प्रो0 आर0एन0 राय प्रो0 जसवंत सिंह, प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह, प्रो0 मृदुला मिश्रा, प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, प्रो0 चयन कुमार मिश्र, प्रो0 आशुतोष सिंन्हा, डॉ0 राजेश सिंह, प्रो0 सिद्धार्थ शुक्ला, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, प्रो0 शैलेन्द्र वर्मा, डॉ0 सुधीर श्रीवा. स्तव, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 आरएन पाण्डेय, डॉ0 विनोद चौधरी, अवधेश यादव, पारितोष त्रिपाठी, परिमल त्रिपाठी, रमेश मिश्र, डॉ0 मुकेश वर्मा, डॉ0 राजेश सिंह सहित बड़ी संख्या में सोशल डिस्टेंसिंग का अनुपालन करते हुए शिक्षक एवं अन्य उपस्थित रहे।

कुलपति ने परिसर की व्यायामशाला का किया निरीक्षण

07 अगस्त । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के पदमश्री अरुणिमा सिन्हा, स्टूडेंट एमिनिटी सेन्टर में अत्याधुनिक व्यायामशाला का शारीरिक दूरी का पालन करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान सोशल डिस्टेंसिंग का अनुपालन करते हुए व्यायामशाला को खिलाड़ियों के लिए खोलने का निर्देश भी प्रदान किया।

इस अवसर पर क्रीड़ा परिषद अध्यक्ष प्रो0 जसवंत सिंह, क्रीड़ा परिषद सचिव डॉ0 संतोष गौड़, क्रीड़ा प्रभारी डॉ0 मुकेश कुमार वर्मा ने कुलपति को एमिनिटी सेन्टर में उपलब्ध खेल–उपकरणों से अवगत भी कराया। नरीक्षण के दौरान मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, कुलसचिव उमानाथ, डॉ0 संग. राम सिंह, डॉ0 विनोद चौधरी, डॉ0 नरेश चौधरी, गिरीश चंद्र पंत, संघर्ष सिंह, देवेन्द्र वर्मा और अरविन्द यादव मौजूद रहे।

•भारतीय शिक्षण मण्डल, अवध प्रान्त एवं डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के संयुक्त संयोजन में ''भारत एवं युवाः कर्तव्य एवं अपेक्षाएं'' विषय पर दो दिवसीय (15–16 जुलाई, 2020) राष्ट्रीय ई–संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

• अवध विश्वविद्यालय आई0ई0टी0 संस्थान के सिविल और मैकेनिकल विभाग द्वारा ''प्रेक्टिकल लर्निंग थ्रू वर्चुअल लैब'' विषय पर पांच दिवसीय(20 जुलाई, 2020) कार्यशाला का आयोजन किया गया।

•डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के आई0ई0टी0 संस्थान के एम0सी0ए0 विभाग में ''कम्युनिकेशन एंड कंप्यूटिंग इंडस्ट्री 4.0'' विषय पर दो दिवसीय(27–28 जुलाई, 2020) ई–नेशनल कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया।

•अवध विश्वविद्यालय के पदमश्री अरुणिमा सिन्हा स्टूडेंट एमिनिटी सेन्टर में अत्याधुनिक व्यायामशाला और क्लाइम्बिंग वॉल का उद्घाटन 30 जुलाई, 2020 को किया गया।

शिक्षा के साथ अनुसंधान को अंगीकृत करना होगा : कुलपति

06 अगस्त। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कौटिल्य प्रशासनिक भवन से विश्वविद्यालय के अधिकारियों, संकायाध्यक्षों, विभागाध्यक्षों, समन्वयकों एवं शिक्षकों के साथ ऑनलाइन संवाद किया। प्रो0 सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में शिक्षा के साथ अनुसंधान को अंगीकृत करना होगा। उच्च शिक्षा में गुणवत्ता का संवर्धन अनुसंधान के माध्यम से समावेशित होता है। कोविड महामारी के कारण ऑनलाइन कक्षाएं ही विकल्प के तौर स्थापित हैं। आगामी सेमेस्टर को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षकों को ई–कंटेन्ट को तैयार करके विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड करना होगा, जिससे विद्यार्थियों को पठन–पाठन में किसी प्रकार की असुविधा का सामना ना करना पड़े। विश्वविद्यालय प्रशासन शासन के आदेश के अनुरूप उसका पालन सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

इस अवसर पर कुलपति प्रो0 सिंह ने विश्वविद्यालय में नये सत्र से प्रवेश प्रक्रिया, परीक्षा, विभागों में कक्षाओं का संचालन, शोध गतिविधियों जैसे प्रमुख बिन्दुओं पर संबंधित संकायाध्यक्षों विभागाध्यक्षों एवं समन्वयकों से पंजीयन तिथि विस्तारित करने का आदेश प्रदान बिन्दुवार चर्चा की। कुलपति ने कोविड–19 किया।

महामारी के दृष्टिगत शिक्षण कार्य संचालन के लिए विस्तृत रूप से विचार विमर्श किया। शिक्षा व्यवस्था पर पड़ रहे प्रभावों के निराकरण के लिए ई–कंटेंट, ऑनलाइन क्लासेज के माध्यम से शैक्षिक गतिविधियों को जारी रखने के लिए निर्देश दिये। कुलपति ने नये सत्र में प्रवेश सम्बन्धित प्रगति के लिए पंजीकृत छात्रों की संख्या विभागवार प्रस्तुत करने को कहा और कोविड–19 के संक्रमण को देखते हुए प्रवेश की परीक्षा के सम्बन्ध में कुलसचिव उमानाथ ने बताया कि विश्वविद्यालय परीक्षाओं के संदर्भ में शासन के द्वारा जारी निर्देशों का अनुपालन करते हुए तैयारी चल रही है। शीघ्र ही कुलपति महोदय के निर्देश के अनुपालन में निर्णय लिया जायेगा।

इस अवसर पर मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, प्रो0 आर0के0 तिवारी, प्रो0 एन0के0 तिवारी, प्रो0 जसवंत सिंह, प्रो0 एस0एन0 शुक्ल, प्रो0 चयन मिश्र, प्रो0 राजीव गौड़, प्रो0 के0के वर्मा, प्रो0 फारूख जमाल, प्रो0 नीलम पाठक, प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 एस0एस0 मिश्र, डॉ0 नीता सिंह, डॉ0 अशोक राय, प्रो0 सिद्धार्थ शुक्ल, डॉ0 विनोद चौधरी, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, डॉ0 अनिल यादव सहित बड़ी संख्या में शिक्षक उपस्थित रहे।

शिक्षिकाओं की समस्याओं का शीघ्र निराकरण होगा : प्रो0 सिंह

06 अगस्त । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कौटिल्य प्रशासनिक भवन में आयोजित कार्यक्रम में सोशल डिस्टेंसिंग के अनुपालन के साथ परिसर की शिक्षिकाओं के साथ कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने वार्ता की।

वार्ता में कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने शिक्षिकाओं से प्रशासनिक तथा एकेडमिक जानकारी प्राप्त करते हुए कहा कि शिक्षिकाओं की समस्याओं का शीघ्र निराकरण होगा। उन्होंने शिक्षिकाओं से कहा कि परिसर में एक संयुक्त ग्रीवान्स सेल गठित किया जाए जिससे छात्राओं की समस्याओं को त्वरित गति से निराकरण किया जा सके।

बैठक में कुलपति ने शिक्षिकाओं की समस्याओं में मेटरनिटी लीव इत्यादि के लिए निर्णय के लिए महिलाओं द्वारा समिति बनाने का सुझाव दिया। इसी क्रम में शिक्षिकाओं ने आईआईटी संस्थान में एक गर्ल्स कॉमन रूम बनाने एवं अन्य सुविधाओं को उपलब्ध कराने का अनुरोध किया। बैठक में कुलपति ने शिक्षिकाओं को रिसर्च प्रोजेक्ट लिखने के लिए प्रेरित किया तथा बताया कि इस संदर्भ में उनकी ओर से हर संभव मदद की जायेगी। कुलपति ने यह भी आदेशित किया कि विश्वविद्यालय के हर संकाय में एक प्राथमिक चिकित्सा सेल गठित किया जाएगा। जिससे किसी भी आपदा से निपटने के लिए यह सेल मददगार हो। शिक्षिकाओं ने कुलपति से कहा कि जेंडर सेंसटाइजेशन तथा जेंडर इक्विटी पर विश्वविद्यालय को विशेष रूप से ध्यान देने की जरूरत है जिससे कि विश्वविद्यालय की समस्त समितियों में समान भागीदारी मिल सके।

बैठक में प्रो0 मृदुला मिश्रा, प्रो0 तुहिना वर्मा, प्रो0 नीलम पाठक, डॉ0 नीलम यादव, डॉ0 वंदना रंजन, डॉ0 नीलम सिंह, डॉ0 शशि सिंह, डॉ0 वन्दिता पाण्डेय, इंजीनियर मनीषा यादव, डॉ0 दीपिका श्रीवा. स्तव, डॉ0 प्रियंका श्रीवास्तव, इंजीनियर नूपुर केशरवानी, पल्लवी सोनी सहित अन्य शिक्षिकाएं उपस्थित रहीं।

छात्रों के प्रार्थना–पत्रों का निस्तारण एकल विण्डो से

16 जुलाई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय ने कोविड–19 महामारी से बचाव के दृष्टिगत परिसर में आने वाले छात्रों के नामांकन, अंकतालिका, उपाधि आदि अन्य कार्यों के लिए प्रार्थना–पत्र एकल विण्डो काउण्टर पर जमा करने का आदेश निर्गत किया है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ ने बताया कि कोरोना महामारी के संक्रमण से बचने के लिए छात्र–छात्राओं के नामांकन, अंकतालिका, उपाधि आदि अन्य किसी भी कार्य के लिए प्रार्थना–पत्र एकल विण्डो काउण्टर पर ही जमा किए जाएंगे। इसके लिए सम्बन्धित विभाग को दिशा–निर्देश प्रदान कर दिया गया है। एकल विण्डो काउण्टर के माध्यम से ही छात्र–छात्राओं के प्रार्थना–पत्रों का निस्तारण करते हुए सम्बन्धित प्रपत्र प्रेषित किए जाएंगे।

वेबसाइट पर ई–कंटेंट अपलोड करने के लिए दिशा–निर्देश

07 अगस्त। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कोविड–19 महामारी के दृष्टिगत विश्वविद्यालय में शैक्षिक गतिविधियों को बनाये रखने के लिए संकायाध्यक्षों, विभागाध्यक्षों एवं पाठ्यक्रम संयोजकों के साथ ऑनलाइन बैठक की।

बैठक में कुलपति प्रो0 सिंह ने सभी से ई–कंटेंट की तैयारियों का जायजा लिया एवं इसे शीघ्र ही विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड करने के लिए दिशा–निर्देश प्रदान किया। बैठक में वर्क फ्रॉम होम के तहत जारी शैक्षिक गतिविधियों को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए आवश्यक दिशा–निर्देश दिए गए।

कुलपति ने सभी शिक्षकों को ई–कंटेंट की तैयारी में मार्ग–दर्शन करते हुए ई–लेक्चर तैयार कराने, नये सत्र में प्रवेश प्रक्रिया संचालित किये जाने पर तैयारियों की समीक्षा की।

कुलपति ने ओपन एक्सेस लिंक के साथ पाठ्यक्रमवार ई–कंटेंट को वेबपोर्टल पर उपलब्ध कराये जाने के लिए निर्देश प्रदान किया। जिससे विद्यार्थियों को अध्ययन में सुविधा हो सके।

इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, उपकुलसचिव विनय कुमार सिंह, मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, प्रो0 एस0एन0 शुक्ल, प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 जसवंत सिंह, प्रो0 राजीव गौड़, प्रो0 चयन कुमार मिश्र, प्रो0 के0के0 वर्मा, प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, प्रो0 सिद्धार्थ शुक्ल, डॉ0 अशोक कुमार राय, डॉ0 नीता सिंह, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, प्रो0 अनुप कुमार, प्रो0 रमापति मिश्र, डॉ0 सुरेन्द्र मिश्र, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 विनय मिश्र सहित अन्य उपस्थित रहे।

प्रभु श्रीराम भव्य मन्दिर में विराजमान होंगेः कुलपति

05 अगस्त। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय स्थित श्रीराम शोधपीठ में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पद्म् विभूषण जगतगुरू श्री रामभद्राचार्य महाराज ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज के दिन 05 अगस्त को गत वर्ष धारा 370, 35ए का समाप्त होना, महिला सशक्तीकरण के रूप में तीन तलाक, प्रधानमन्त्री गरीब अनाज योजनान्तर्गत 80 करोड़ परिवारों को

श्रीराम शोधपीठ के समन्वयक प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि श्रीराम मंदिर के भूमि पूजन एवं शिलान्यास से अयोध्या के तीर्थ एवं पयर्टन को बढ़ावा मिलेगा।

मां सरस्वती एवं भगवान श्रीराम के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया।

कुलपति आचार्य रवि शंकर

मुफ्त राशन, 10 करोड़ परिवारों को मुफ्त शौचालय मिलना एवं भारत में 05 राफेल का आना रामराज्य की शुरूआत है। जगतगुरू ने कहा कि मैंने श्रीराम के जन्मभूमि के मुकदमों के सम्बन्ध में जो पौराणिक तथ्यों को प्रस्तुत किया, कोर्ट ने उसका जिक्र बार–बार किया।

कार्यक्रय की अध्यक्षता कर रहे कुलपति आचार्य रवि शंकर सिंह ने कहा कि भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी, राज्यपाल आनन्दीबेन पटेल एवं मुख्य–मन्त्री योगी आदित्यनाथ का भूमिपूजन एवं शिलान्यास में उपस्थित रहना, अयोध्या के लिए गौरव की बात है। कुलपति ने कहा कि भगवान श्रीराम का 500 सालों का बनवास समाप्त हुआ और अब टेन्ट की जगह प्रभु श्रीराम भव्य मन्दिर में विराजमान होंगे।

कुलपति ने कहा कि डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या में श्रीराम शोधपीठ का स्थापित होना हमारे लिये गर्व की बात है। श्रीराम शोधपीठ में भगवान श्रीराम पर शोध का कार्य अनवरत चलता रहेगा। श्रीराम शोधपीठ में जो कमियां होगी, उसे तत्काल दूर किया जायेगा।

सिंह द्वारा मुख्य अतिथि पद्म् विभूषण जगतगुरू श्री रामभद्राचार्य महाराज एवं विशिष्ट अतिथि महन्त श्री राजकुमार दास को स्मृति चिन्ह प्रदान कर स्वागत किया गया।

विभाग के समन्वयक, प्रो0 अजय प्रताप सिंह द्वारा कुलपति प्रो0 सिंह का स्मृति चिन्ह के साथ स्वागत किया गया।

कार्यक्रम में कार्यपरिषद् सदस्य ओम प्रकाश सिंह, कुलसचिव उमानाथ, प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, प्रो0 सिद्धार्थ शुक्ला, डॉ0 संग्राम सिंह, डॉ0 अनिल कुमार, डॉ0 राना रोहित, डॉ0 विनोद चौधरी, प्रो0 आर0के0 सिंह, डॉ0 दिलीप सिंह, डॉ0 सुधीर प्रकाश श्रीवास्तव, ई0 अवधेश यादव, कर्मचारी परिषद् अध्यक्ष राजेश पाण्डेय, डॉ0 राजेश सिंह, अनूप सिंह, विष्णु प्रताप यादव, डॉ0 मोहन चन्द्र तिवारी, आदित्य प्रकाश सिंह, अरूण प्रताप सिंह, कृतिका निषाद्, ज्योति सिंह, वल्लभी तिवारी, शारदा पाण्डेय, दिव्यव्रत सिंह, रामजी सिंह, हरीराम, अखिलेश आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।